

मन के जीते जीत सवा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 06-05-2016 ● अंक-516 ● तारीख - 07 मई 2016, वैशाख शुक्ल - 1 ● शनिवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ-02 ● मूल्य-1 रुपया ● पृष्ठ-01

अनमोल वचन (सत्यसाई बाबा)



प्रेम

प्रेम विचार में सत्य है।
प्रेम क्रिया में अच्छाई है।
प्रेम अनुभव में सौन्दर्य है।

आइये! जानें - साई अवतार

1. भगवान श्री सत्य साई को किसका अवतार माना जाता है ?

—शिव शक्ति का

2. श्री सत्य साई का जन्म किस स्थान पर हुआ ?

—पुट्टपर्ती जिला अनन्तपुर (आंध्र प्रदेश)

3. श्री सत्य साई का जन्म कब हुआ ?

—23 नवम्बर 1926, प्रातः 5 बजकर 6 मिनट

4. श्री सत्य साई का जन्म किस नक्षत्र व दिन में हुआ था ?

—कार्तिक महीना, आर्द्रा नक्षत्र तथा सोमवार

5. श्री सत्य साई बाबा के बचपन का क्या नाम था ?

—सत्या और सत्य नारायण राजू

6. श्री सत्य साई का जन्म किस उद्देश्य से हुआ है ?

—वेद पोषण, विद्वत् पोषण, भक्त रक्षण और धर्म रक्षण के लिये

7. श्री साई बाबा ने "मैं शिरडी का साई बाबा हूँ" घोषणा कब की थी ?

—20 अक्टूबर 1940 को

8. जन्म के बाद साई बाबा के बिस्तर के नीचे क्या देखा गया ?

—शेषनाग

9. श्री सत्य साई बाबा के माता-पिता का नाम —

—ईश्वरम्मा तथा श्री पेददवैकम्पा राजू

10. भगवान बाबा ने किस ऋषि के गोत्र में जन्म लिया ?

—ऋषि भारद्वाज के

कबीर दास जी के दोहे

साधु ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय,
सार-सार को गहि रहै, थोथा देई उड़ाय।
अर्थ:- इस संसार में ऐसे सज्जनों की जरूरत है जैसे अनाज साफ करने वाला सूप होता है, जो सार्थक को बचा लें और निरर्थक को उड़ा दें।

नीबू के घरेलू नुस्खे

1 अगर शरीर में विटामिन सी की मात्रा कम हो जाए, तो एनीमिया, जोड़ों का दर्द, दांतों की बीमारी, पायरिया, खांसी और दमा जैसी दिक्कतें हो सकती हैं। नीबू में विटामिन सी की मात्रा बहुत ज्यादा होती है। इसलिए इन बीमारियों से दूरी बनाने में नीबू का सेवन हमारी बहुत मदद करता है।

2 पेट खराब, पेट फूलना, कब्ज, दस्त होने पर नीबू के रस में थोड़ी सी अजवायन, जीरा, हींग, काली मिर्च और नमक मिलाकर पीने से आपको काफी राहत मिलेगी।

3 चेहरे पर मुंहासे होना एक आम समस्या है। इसे दूर करने के लिए नीबू रस में चंदन घिसकर लेप लगाएं। अगर दाद हो गया है, तो इसी लेप में सुहागा घिसकर लगाएं, आपको आराम मिलेगा।

4 कई बार लंबी दूरी की यात्रा करने पर शरीर में बहुत थकान महसूस होती है। ऐसे में एक लिटर पानी में दो नीबू निचोड़कर उसमें 50 किशमिश भिगो दें। रातभर भिगाने के बाद सुबह किशमिश पानी में मथ लें। यह पानी दिनभर में चार बार पीएं। इससे एनर्जी मिलेगी और बॉडी की फिटनेस भी बनी रहेगी।

5 मोटापे से आजकल हर दूसरा शख्स परेशान होता है। इससे छुटकारा पाने के लिए आप मूली के रस में नीबू का रस व थोड़ा नमक मिलाकर नियमित रूप से लें। मोटापा दूर होगा।



भारत-न्यूजीलैंड के बीच सीधी उड़ान सेवा के लिए समझौता

भारत और न्यूजीलैंड ने दोनों देशों के बीच सीधी उड़ान सेवा के लिये एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। इससे पर्यटन और व्यापार को बढ़ावा मिलेगा। द्विपक्षीय हवाई सेवा समझौते पर हस्ताक्षर के समय यहां आए राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी और न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री जॉन के मौजूद थे।

न्यूजीलैंड के परिवहन मंत्री सिमोन ब्रिज ने कहा कि हवाई सेवा समझौते से न्यूजीलैंड एवं भारत के बीच पर्यटन और व्यापार को गति



मिलनी चाहिए। समझौते पर ब्रिज और भारत के कृषि एवं किसान कल्याण राज्यमंत्री संजीव बाल्यान ने दस्तखत किये। राष्ट्रपति प्रणब

मुखर्जी ने यहाँ कहा कि अगर असहमति के स्वर नहीं होंगे तो संसदीय प्रणाली काम नहीं कर सकती। उन्होंने रेखांकित किया कि

सदन में "तीखी बहस और चर्चाएं" अर्थव्यवस्था जैसे महत्वपूर्ण मामलों पर फैसले में योगदान करती हैं।

बच्चों को संस्कारवान बनाएं

'विद्या ददाति विनयम्' याने हमारे विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में सबसे पहला संस्कार विनय का आना चाहिये और तभी अच्छे नागरिक की पात्रता आ पायेगी। परंतु अनुशासनहीनता, अराजकता, उच्छृंखलता एवं उदंडता के जो दृश्य हमें दिखाई देते हैं, वे हमें विवश करते हैं कि हम ठिठक कर सोचें कि हम क्या कर सकते हैं? शिक्षा में संस्कारों की उपेक्षा के कारण ही

हमारे समाज का उत्पाद प्रत्येक नागरिक उपयोगिता की कसौटी पर खरा नहीं उतरता। शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का प्रभावी साधन है, परन्तु शाश्वत मूल्य आधारित संस्कारों के अभाव में शिक्षा दिशाहीन हो गई है। शिक्षा के उद्देश्यों में ज्ञान, स्वास्थ्य एवं

आत्म निर्भरता के बाद अंततोगत्वा सदाचार पर दृष्टि होनी चाहिये। देश में ज्ञान-विज्ञान ने प्रगति की है। स्वास्थ्य के मापदण्ड के रूप में औसत आयु की वृद्धि हुई है। मूलभूत आवश्यकताओं—रोटी, कपड़ा और मकान की दृष्टि से भी पूर्वापेक्षा सुधार हुआ है। परन्तु सदाचार की दृष्टि से निश्चय ही गिरावट आई है। जैन आचार्य महाप्रज्ञ के अनुसार साध्य की प्राप्ति हेतु साधनों की पवित्रता यथा अहिंसा, सत्य, अतौर्य, अपरिग्रह एवं ब्रह्मचर्य की उपेक्षा ने समाज में कई विकृतियों को जन्म दिया है। अतः विद्यालयों एवं उच्च शिक्षा संस्थानों दोनों स्तर पर प्रत्येक विषय की शिक्षा में मूल्यों के समावेश पर तथा अनौपचारिक एवं औपचारिक दोनों प्रकार के साधनों एवं अभिकरणों (एजेन्सीज) पर इस हेतु बल दिया जाना चाहिये। शिक्षा के माध्यम से ऐसे संस्कार प्राप्त हों, जो अपनी माटी व संस्कृति से लगाव पैदा करें। हमारे साधन ही



नहीं साध्य भी मूल्य आधारित हों और मूल्य आधारित साध्य प्राप्त नहीं होते। हमें पलट कर साधनों तथा साध्य दोनों की ईमानदारी, अहिंसा, इन्द्रियों का संयम तथा पुरुषार्थ के मूल सिद्धांतों के आधार पर समीक्षा करनी चाहिये। शिक्षा में संस्कारों के बीजारोपण करने हेतु 'योग का प्रशिक्षण' उपयोगी होगा। परंतु वह मात्र सिद्धांत शून्य प्रयोगों की तरह दिखाने के लिये न हो। 'योग' के प्रशिक्षण में 'मुद्राओं' का महत्व है। किसी एक विशेष 'मुद्रा' याने बैठने-लेटने, खड़े होने व अंग संचलित से मन में विशेष प्रकार के 'भाव' आते हैं। इन भावनाओं का सीधा-सीधा संबंध (अंतःस्त्रावी ग्रंथियों) से होता है।

इन ग्रंथियों के स्त्राव (रस उत्पत्ति) से बालक-बालिकाओं के स्वभाव में परिवर्तन आयेगा ही। 'स्वभाव' में परिवर्तन के साथ ही उनका 'व्यवहार' अनुकूल बनता है बालक-बालिकाओं के व्यवहार में अनुकूल एवं समानोपयोगी परिवर्तन ही तो हमारी शिक्षा का लक्ष्य है। बालक-बालिकाओं के अनुकूल एवं समाजोपयोगी 'व्यवहार' का 'प्रभाव' एक स्वस्थ, सुरक्षित एवं संपन्न समाज के निर्माण में योगदान करेगा, यह अवश्यभावी है। क्योंकि 'व्यवहार' एवं 'प्रभाव' का अंतर्निहित संबंध है। संस्कार निर्माण इसी लम्बी प्रक्रिया से ही बनते हैं, जादू के डण्डे या चमत्कार से नहीं। मात्र कथनी से हर स्तर पर 'करनी' अधिक प्रभावी होती है। घर, शिक्षा संस्थान, समाज व शासन के मात्र 'थोथे उपदेशों' से संस्कार निर्माण नहीं होते, उसके लिये सभी को स्वउदाहरण प्रस्तुत करना होगा।

गतांक से आगे ...

मानव मन के बोल



पिण्डवाड़ा की पीड़ा

कभी क्रोध लाना नहीं चाहिए। जिससे बच्चे बिगड़ जाए। मैंने कहा दिन को 3 बजे तक गुस्सा हम नहीं करेंगे ऐसा सुबह-सुबह संकल्प करना चाहिए। आंखें बन्द करके हम मन ही मन में दोहराते हैं—ना। बिना जीभ हिलाए। तुम्हारे 10000 घड़ियों के अलॉम सेट हो जाते हैं। मेरा तो ऐसा ही हुआ। तो मैंने कहा गंगोत्री मुझे याद है कर्नाटक के बेलगांव में एक माता जी ने हाथ ऊंचा किया बोला भाई साहब आपने कहा 3 बजे तक गुस्सा नहीं करना चाहिए। तो बच्चे बिगड़ जायेंगे। बच्चे कहेंगे मां गुस्सा नहीं करती है। कुछ भी कर लो। तो मैंने हंसकर के कहा ऊपर से गुस्सा किया करो। आप ऊपर का करो। आपका हृदय नहीं हिलना चाहिए। तो वो गुस्सा इसलिए कर रहे हैं कि वो बच्चा अनुशासित रहे। बच्चे शायद कुछ सालों तक वो ही भाषा समझते हैं। जब उनको विवेक आ जाएगा तो वो अपने आप आपकी नरमाई को भी स्वीकार कर लेगा। तो मैं निवेदन कर रहा था अहमदाबाद के दोनों युवकों ने अपने ससुर को खून दिया। उनके ससुरजी के चढा। और वो बार-बार अनुगृहित हुए। भयभीत होना भी एक बहुत बड़ा दुर्गुण है। भयभीत हो रहे थे खून निकल जाए तो क्या होगा, क्या होगा? हजारों लोगों ने रक्त दान किया है। हजारों ने यदि रक्त दान नहीं दिया होता तो लाखों लोग असमय मृत्यु को प्राप्त हो जाते।

क्रमशः अगले अंक में ...

ऊर्जा

उत्पन्न

करता है - साहस

परिस्थितियां किसी के भी साथ न तो सदा अनुकूल रहती हैं न प्रतिकूल और न ही किसी एक वर्ग या व्यक्ति के लिए बनती हैं, इसलिए सदा अनुकूलता की उम्मीद करना न केवल व्यर्थ है, अनावश्यक, अनुचित व हानिकारक भी है। उचित

ये होगा कि आप अपनी साहसिकता, आत्मविश्वास और सहन शक्ति बढ़ायें, जो अनिवार्य हो उसे धैर्यपूर्वक सहन करते हुए बुद्धिमत्ता पूर्ण सोच-विचार कर निर्णय लेते हुए संकट का उचित व परिस्थितियों के अनुरूप संकट व समस्या का हाल ढूँढ़ें, जो उचित हो वे उपाय सोचने और प्रयास करने में कोई कमी न रहने दी जाये, हर स्थिति में संतुलन बनाये रखा जाये, कठिनाइयों व मुसीबतों से डर नहीं। वरन अपनी प्रतिभा से हाल व उपाय निकालने में बिना समय गंवाये लग जाना ही साहस कहलाता है। साहस वह हथियार है जो प्रतिकूलता को अनुकूलता में बदलना संभव बनाता है।

सामान्यतः लोग साहसी व्यक्ति का ही साथ देना चाहते हैं और उसी के नेतृत्व में नये चुनौतीपूर्ण व गैर-पारम्परिक तरीके से कार्य को करने और सफलता प्राप्त करना चाहते हैं। जिस प्रकार आत्मविश्वास व्यक्ति में क्षमता का संचार करता है, उसी तरह साहस उसमें ऊर्जा उत्पन्न करता है और व्यक्ति की जीवनचर्या में किए जाने वाले कार्यों में इसका सर्वाधिक महत्त्व और ये तमाम निर्णय की शक्ति का केंद्र बिन्दु होता है।

सम्पादकीय

बन्धुवर, आप इन अनजान रोगियों के लिए दवाइयों का इतना खर्च कर रहे हैं ? इसकी प्रेरणा कहाँ से मिली आपको ?

पराये दुःख से द्रवित होने वाले उन सज्जन ने, एक क्षण मेरी तरफ देखा, आँख डब डबा आई—उनकी। मेरे कंधे पर हाथ रखा, और अतीत की यादों में खो गये। धीरे से बोले मेरा जीवन इन्हीं की धरोहर है। नहीं तो मैं आपको यहाँ दिखाई नहीं देता। आगे की मेरी जिज्ञासा को देखते हुए उन्होंने कहा—यह बात तीन वर्ष पूर्व की है। मैं जयपुर से बस द्वारा बम्बई जा रहा था, रास्ते में कब, कहाँ, कैसे क्या हुआ ? मुझे नहीं मालूम। मुझे तो होश आया तब मैं एस. एम. एस. हॉस्पिटल जयपुर के सर्जिकल वार्ड में एक बेड पर था। मुझे बताया गया कि तीन दिन पूर्व एक बस के एक्सीडेंट में गंभीर घायल होकर मैं संज्ञा शून्य हो गया था। यहाँ लाकर भर्ती कराने से अब तक मुझ पर लगभग एक हजार पाँच सौ रूपयों की दवाइयों का खर्च एक अपरिचित सज्जन ने किया, और लगातार मेरे सिरहाने बैठ कर सेवा के साथ—साथ भगवान से मेरे लिए दुआ की। कहते—कहते उन भाई साहब के पूरे चेहरे पर आँसू बहने लगे। स्वयं को संयत कर बोले— बहुत ढूँढा पर मेरे जीवन दाता उन परोपकारी महानुभाव को नहीं खोज पाया—मैं।

उन सज्जन ने इस बारे में अन्तिम वाक्य कहा। उस दिन से मैं बराबर हर अपरिचित बीमार में अपने उन जीवन दाता को ढूँढ रहा हूँ। मैं तो खोजूंगा ही, मेरे पुत्र पौत्र भी ऐसा करते रहेंगे—प्रभु कृपा से। मुझे यह विश्वास है, और वह सज्जन बढ़ गये—दूसरे बीमार की सेवा करने।

मानव सेवा से ही प्रसन्न होते हैं माधव – रामकृष्ण शास्त्री



उदयपुर। स्वयं विष पीकर इस सृष्टि को अमृत बांटने वाले, देवाधिदेव महादेव की नगरी उज्जैन में चल रहे सिंहस्थ महाकुंभ में, नारायण सेवा संस्थान द्वारा निरंतर सेवा कार्य संचालित किए जा रहे हैं।

निर्वाणी पीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर, पदमश्री अलंकृत एवं संस्थान संस्थापक डॉ. कैलाश मानव ने बताया कि शिविर में अब तक सैंकड़ों दिव्यांग बंधु स्वास्थ्य सेवाओं लाभ उठा चुके हैं। जिनमें निःशुल्क पोलियो ऑपरेशन, फिजियोथेरेपी, कैलिपर्स तथा कृत्रिम अंग वितरण आदि सेवाएँ सम्मिलित हैं। इसी श्रृंखला में उज्जैन निवासी दीपक सक्सेना(49), जो कि एक दुर्घटना में अपने दोनों पांव खो चुका था, को कृत्रिम पांव लगाए गए।



सेवा और सत्संग की इस पावन वेला में पूज्या कृष्णा माँ ने कहा कि हम आकृति से मनुष्य हैं, किंतु प्रकृति से मनुष्य नहीं हैं। माँ क्षिप्रा के इस पावन जल में स्नान करके हमें विचारों और बुद्धि की मलिनता को त्याग कर, अपने चित्त को पवित्र कर लेना चाहिए। सायंकालीन सत्र में पूज्य राम कृष्ण शास्त्री ने कहा कि मानव की सेवा करने से ही माधव प्रसन्न होते हैं। बाबा के दरबार में आकर आप नर रूपी नारायण की सेवा करें। दीनों का दुःख दूर करने का प्रयास करें तो आपको कुंभ स्नान का ही फल मिलेगा। कथा एवं सत्संग की इस पवित्र प्रवाह में मंच संचालन कृपा व्यास ने किया।

रविन्द्रनाथ टैगोर (जयन्ती)



रविन्द्रनाथ टैगोर एक मूर्धन्य कहानीकार, नाटककार, कवि, निबंधकार, गीतकार तथा चित्रकार हैं। रविन्द्रनाथ टैगोर नोबल पुरस्कार प्राप्त करने वाले भारत के पहले व्यक्ति हैं तथा इन्होंने ही भारत के राष्ट्रगान (जन-गण-मन) तथा बंगला देश के राष्ट्रगान (आमार सोनार) की रचना की थी। ये भारत देश के असाधारण व्यक्ति थे। इसलिए इनके नाम पर डाक टिकट भी लागू की गई थी।

रविन्द्रनाथ टैगोर का जन्म 7 मई 1861 को पश्चिम बंगाल के कलकत्ता क्षेत्र में हुआ था। इनका जन्म एक सम्पन्न परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम देवेन्द्रनाथ टैगोर था तथा इनकी माता का नाम शारदा देवी था।

टैगोर ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा प्रसिद्ध सेंट जेवियर स्कूल से प्राप्त की थी। टैगोर के पिता एक समाज सुधारक थे। वे हमेशा से अपने पुत्र टैगोर को बैरिस्टर बनाना चाहते थे। इसलिए इन्होंने टैगोर की स्कूल की शिक्षा समाप्त होने के पश्चात् इन्हें लन्दन में भेज दिया और इनका दाखिला लन्दन के प्रसिद्ध कॉलेज "ब्रिजटोन पब्लिक स्कूल" में कर दिया। लेकिन टैगोर जी का ध्यान बिल्कुल बैरिस्टर की पढ़ाई में नहीं लगता था। उन्हें साहित्य पढना और लिखना अधिक अच्छा लगता था। इसलिए वे लन्दन से अपनी पढ़ाई पूरी किये बिना कुछ ही दिनों में भारत वापस लौट आये थे।

साहित्यकार के रूप में रविन्द्रनाथ टैगोर

टैगोर जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। टैगोर जी बहुभाषी भी थे। ये हिंदी, अंग्रेजी तथा बंगला भाषा में सिद्धहस्त थे। इन्हें साहित्य जगत की हर एक विधा का ज्ञान था तथा ये बंगला भाषा में प्रत्येक विधा जैसे – नाटक, निबंध, कविता, कहानी, उपन्यास आदि सभी विधाओं में रचना करते थे। ये अपनी रचनाएँ गुरुदेव के नाम से लिखते थे। इनकी सर्वश्रेष्ठ रचना भारत एवं बांग्लादेश का राष्ट्रगान तथा गीतांजलि हैं। गीतांजलि ही

इनकी वह रचना है जिसके आधार पर इन्हें सन् 1913 में नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ था। रविन्द्रनाथ टैगोर ने अनेकों रचनाएँ रची हैं। जिनमें से पोस्टमास्टर, मास्टर साहब, गोरा, गहरे – बाईरे, काबुलीवाला, क्षुधित पाषाण, आधी रात में आदि कुछ महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं।

शांति निकेतन में प्रायोगिक विद्यालय की स्थापना—

सन 1901 में रविन्द्रनाथ टैगोर ने शान्तिनिकेतन में एक प्रायोगिक विद्यालय की स्थापना की थी। इन्होंने इस विद्यालय की शुरुआत पांच छात्रों को लेकर की थी। इस प्रायोगिक विद्यालय की स्थापना करने के पीछे रविन्द्रनाथ टैगोर का मुख्य उद्देश्य भारतीय संस्कृति तथा पश्चिमी संस्कृति के लोगों का एक दूसरे की संस्कृति से परिचित कराना था। जिसमें वो काफी हद तक सफल भी हुए थे। इसके अलावा इस विद्यालय की स्थापना टैगोर ने कला, साहित्य और संगीत में दिलचस्पी रखने वाले छात्रों को विभिन्न कलाओं की शिक्षा देने के लिए भी की थी। रविन्द्रनाथ द्वारा कला की शिक्षा बच्चों को देने की यह कोशिश भी सफल हो गई थी। क्योंकि विद्यालय की स्थापना के कुछ समय के बाद यह विद्यालय कला की शिक्षा देने वाला सर्वश्रेष्ठ विद्यालय के रूप में जाना जाने लगा था।

समाजिक कार्यकर्ता के रूप में रविन्द्रनाथ टैगोर

टैगोर जी अपने पिता की ही भांति एक समाज सेवी थे। इन्होंने भारत को आजादी दिलाने में भी बहुत ही अहम भूमिका निभाई थी। इन्होंने 16 अक्टूबर 1905 में बंग – भंग आन्दोलन का नेतृत्व भी किया था।

इन्हें ब्रिटिश सरकार ने इनकी योग्यता के लिए "नाइट हुड" की उपाधि प्रदान की थी। ब्रिटिश शासनकाल में जिस व्यक्ति को नाइट हुड की उपाधि प्राप्त की जाती थी। वह अपने नाम के आगे "सर" लगता था। सन् 1919 में लाहौर के जलियांवाला बाग कांड के बाद रविन्द्रनाथ टैगोर ने ब्रिटिश प्रशासन का विरोध और उनकी निंदा करते हुए इस उपाधि को वापिस लौटा दिया था।

जयपुर के ऐतिहासिक स्थल

दुनिया के ऐतिहासिक शहरों की श्रेणी में जयपुर का नाम सम्मान से लिया जाता है। रोम और मिश्र जैसे ऐतिहासिक शहरों की श्रेणी में रखे जाने वाले इस शहर में और इसके आस पास ऐतिहासिक स्थलों की भरमार है। जयपुर एक स्थानांतरित राजधानी है। पिकसिटी जयपुर तब अस्तित्व में आया जब आमेर में जलस्रोतों की कमी और बढ़ती जनसंख्या के दबाव के कारण शहर के विस्तार की नौबत आई। चारों ओर से पहाड़ियों से घिरे आमेर में विकास की संभावनाएं कम थी। इसलिए आमेर के दक्षिण में पहाड़ियों से लगे मैदान में एक नया शहर बसाने की योजना अमल में लाई गई। यह योजना जयपुर के लिए थी। अगर ऐतिहासिकता की बात की जाए तो जयपुर से ज्यादा महत्व आमेर का है। आमेर आज जयपुर के एक कस्बे के तौर पर देखा जाता है लेकिन आमेर का इतिहास 1100 साल पुराना है। जबकि जयपुर की उम्र अभी तिन सौ साल से भी कम है। इतिहास से प्रेम करने वालों के लिए जयपुर एक महत्वपूर्ण डेस्टिनेशन है। आइये जानें जयपुर के ऐतिहासिक स्थलों के बारे में—

आमेर

आमेर आठवीं सदी का ऐतिहासिक शहर है। जयपुर शहर से उत्तर में लगभग 11 किमी पर बसा यह शहर अपने किलों, महलों, जलाशयों, मंदिरों, हवेलियों और पुराने बाजार के कारण विख्यात है। इतिहासविद इस शहर का दौरा इतिहास की स्थापत्य कलाओं और जनजीवन को समझने के लिए करते हैं। जयपुर शहर से इस कस्बे की कनेक्टिविटी अच्छी है। सड़क मार्ग से आमेर पूर्व में नेशनल हाईवे जयपुर-दिल्ली से जुड़ा है तो दक्षिण में जयपुर से जोड़ने वाली आमेर घाटी है। आमेर का मुख्य स्टेण्ड आमेर महल के सामने है। आमेर में अनेक मंदिर दक्षिण हिन्दू शैली के हैं। कुछ हवेलियों का स्थापत्य 8 वीं सदी के निर्माण की याद दिलाता है। यदि आप आमेर घूमना चाहते हैं तो जयपुर से सुबह जल्दी आमेर के लिए निकलें। कुछ दूर यहाँ की पलियों और बाजारों में घूमकर आम प्राचीन स्थापत्य का आनंद ले सकते हैं। इसके बाद आप आमेर का महल देखें। आमेर महल को अच्छी तरह देखने के लिए कम से कम दो घंटे का समय लगता है। मुख्य स्टेड से हाथी की सवारी करते हुए आमेर महल के मुख्य दरवाजे तक पहुँचने के बाद आप से खास आनंद है। आमेर महल में शिल्प और कला के खास शोषा महल, मुगल गार्डन, सुबह मंदिर, आमेर महल, सिन्धिया के महल देखने लायक हैं। आमेर महल के बाहर एक बगीचा है। यह बगीचा आमेर महल के पिछले हिस्से में स्थित है। इस बगीचे में करबे के मुख्य स्टेड तक आ सकते हैं।



उत्साह उमंग उल्लास

(मानव धर्म श्रृंखला का तृतीय (3) पुष्प) गतांक से आगे.....

खुद के लिए जीना विकृति.. समाज के लिए जीना संस्कृति

रन्तिदेव... 37 दिन महिम जी— आईये चलते हैं हमारी झाँकी की ओर जहाँ पर रन्तिदेव भोजन के लिये बैठे हैं पत्नी और बच्चों के साथ और वहाँ पर उसी समय एक भिखारी आता है।... गुरुदेव से इस कथा को जानते हैं।

गुरुदेवजी— बोलिये मानव धर्म की जय, रन्तिदेव महाराज की जय। रन्तिदेव महाराज इतने बड़े प्रजा पालक, दुर्भाग्य से राज्य में अकाल पड़ा। स्वयं रन्तिदेव जी 37 दिन के भूखे, भोजन नहीं मिला। पहले मेरी प्रजा को भोजन मिले, मेरे राज्य में कोई भूखा नहीं रहे। स्वयं 37 दिन भूखे रहे और 38 वें दिन जब भोजन आया, भगवान को हाथ जोड़े, गौ ग्रास निकाला और बोलने लगे "हे सर्व शक्ति सम्पन्न प्रभु, करबद्ध विनय हम करते हैं, सेवा में वस्तु आप ही अर्पण कर भोजन करते हैं।" जैसे ही ग्रास तोड़ा, ग्रास ऊपर लिया, कोई चिल्लाया, महाराज रन्तिदेव जी, महाराज रन्तिदेव जी, मैं बहुत भूखा हूँ मुझे भोजन चाहिए। रन्तिदेव जी ने ग्रास को मुँह में नहीं रखा, ग्रास को पुनः थाली में रखा और 37 दिन के भूखे रन्तिदेव जी ने अपने भोजन की थाली अतिथि देव जी को दे दी। आप भोजन करो, आप क्षुधा को तृप्त करो। मैं भूखा रह जाऊँगा, कोई बात नहीं और अतिथि को भोजन करा दिया। ऐसे थे रन्तिदेव जी, जिन्होंने कहा था—न मैं स्वर्ग चाहता हूँ, न मैं मोक्ष चाहता हूँ। हे परमात्मा, आप ऐसा आशीर्वाद दो, आप ऐसी कृपा करो, बार—बार ये मानव जीवन मिले, बार—बार ये मानुष की देहि मिले, बार—बार मनुष्य की योनि मिले और बार—बार पीड़ितों की आँखों के आँसू मैं दूर कर सकूँ। मैं घाव पर मरहम लगा सकूँ, मैं किसी भूखे को भोजन करा सकूँ। बोलिये रन्तिदेव महाराज की जय। बोलिये वृंदावन बिहारी लाल की जय।

भारत भूमि देवभूमि

मत्स्यावतार कथा... सप्तपुरी दर्शन चारधाम

महिम जी— आईये मत्स्य अवतार की ये कथा स्वर लहरियों में जानते हैं—

प्रलय काल के पूर्व कहा था,

श्रीमनु जी महाराज को।

अरे बचाने योग्य बचालो,

सम्मुख रखना नाव को।।

मानव धर्म के सूत्र बचाना,

मानव धर्म के धान्य को।

बीज बचाना, दया बचाना,

करुणा दान आरोग्य को।।

श्री हरि भगवान ने मानव धर्म की रक्षा के लिए जब मत्स्यावतार धारण किया। एक मछली, जिसने आर्त स्वरों में कहा था, मनु महाराज बचा लीजिये। कमण्डल से बड़ी हो गयी, सरोवर से भी बड़ी हो गई, गंगा नदी जैसी बड़ी हो गई और समुद्र में आकर कहा था। भारतीय संस्कृति को बचा लेना, प्रलय होने वाला है, सात दिनों में पृथ्वी डूब जाएगी, चारों तरफ जल ही जल हो जाएगा। उस समय मैं एक नाव लेकर सींग वाली मछली के रूप में आऊँगी, मेरे सींगों में रस्सी डाल देना।

क्रमशः

मुख्य कार्यकारी अधिकारी—कैलाश 'मानव' मार्गदर्शक—प्रशान्त अग्रवाल, जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा मार्गदर्शिका—कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल अध्यक्ष प्रबन्धक—मोहन लाल गाडनी संपादक—लक्ष्मीलाल गाडनी संपादन सल्योगी—घनश्याम निरंट नौड

संवा-आमंत्रण

पुरातन, वैदिक एवं शास्त्रत नगरी—महाकाल की पावन धरा पर

सिंहस्थ कुम्भ महापर्व-2016

30 दिवसीय भक्ति-शक्ति एवं सेवा-अध्यात्म पर्व

नारायण सेवा संस्थान एवं सेवा परमो धर्म (ट्रस्ट), उदयपुर

सहायताार्थ

श्रीमद्भागवत कथा

कैलाश 'मानव' संस्थापक चेशरमैन

कमला देवी सहसंस्थापिका

प्रशान्त अग्रवाल 'सेवक' अन्तराष्ट्रीय अध्यक्ष

वन्दना अग्रवाल निदेशक

जगदीश आर्य, रस्सी एवं निवेशक

देवेन्द्र चौबीसा, दस्ती एवं निदेशक

भक्ति एवं सेवा के महापर्व में एक आर्तित आपकी भी, कृपा सपरिहार पधारें।

दिनांक - 6 से 12 मई, 2016

समय - प्रातः 11.00 बजे से सांय 03.00 बजे तक

पर्व स्थल—महापृत्युज्य परिसर, मंगलनाथ, चोन- 2, उज्जैन (म.प्र.)

संपर्क सुत्र - 0294-6622222, 3990000, 96494-99999 Fax : 0294-2464445

Web: www.nsskumbh.org, E-mail: info@narayanseva.org

www.narayanseva.org

निषेधक